शब्द रंजन

विचार एवं जन संवाद का पाक्षिक

● वर्ष 1 ● अंक 1 ● उदयपुर, शुक्रवार 15 जनवरी 2016 ● पेज 8 ● मूल्य ₹5.00

प्रकाशकीय

साहित्य की सुधियों का सौहार्द

एम. कॉम करने के पश्चात जब पीएच.डी. करने का प्रसंग आया तो मैंने अपने अंचल, मेवाड़ की पत्र-पत्रिकाओं का वाणिज्यिक अध्ययन करने का ही मानस बनाया। यों पापा डॉ. महेन्द्रजी से बात चाहे साहित्य की हो, संस्कृति या कला या फिर पत्रकारिता की ; मुझे सब कुछ विरासत में मिला।

सन् 1979 के 15 नवंबर को पीछोला का पहला अंक प्रकाशित किया था। तब का समय साहित्य, कला तथा जीवनधर्मिता की दृष्टि से भी आज के समय से भिन्न था। आज की तरह समय और समझ की भागमभाग इतनी तीव्र नहीं थी। होड़ाहोड़ का वितान भी अपनी सीमा में सिकुड़ा हुआ था। हौसलों में बुलंदगी थी पर जरा भी खोट नहीं थी। कहीं जो कुछ करना होता, पहले कई तरह से उसके गुण-अवगुण परखे जाते थे। आज तो 'कूद जाओ, आंख मींचकर, जो होगा सो देखा जाएगा' जैसी बहादुरी तत्काल ही लगे छू हो जाती है।

सृजन का स्वभाव भी काफी बदल गया है। तब संतोष का सृजन था। लिख-लिख कर सहेजने का सृजन था। कहीं पहचान होती तो सृजन की होती थी। अब उल्टी गंगा हो गई है। सर्जक स्वयं अपने सृजन से भी सवाया बनाठना रहता है।

अब सब बदल गया है। सर्वथा जैसे एक नई दुनिया बन गई है। सृजन की चासनी का तार और उसकी मिठास का स्वाद बदला गया है पर सर्जक का तामझाम, रूतबा और दिलोदिमाग बड़ी तेजी और तर्राटी लिए निखरा है। साहित्य का शंख गांवों तक फूंकमार बना है। लोकार्पण के फीते काटने के समारोहिक उत्सव अकल्पनीय बने हैं। पुस्तक-परिजन-मंडल का मंचासीन होना नासमझियों की सर्वसमझ की पेराविणी सा माहौल लगता है। अध्यक्ष, लोकार्पणकर्ता और मुख्य अतिथि तक सोचे, समझे बुलाये जाते हैं। भीड़ भी 'अब चलो बुलावा आया है' की तर्ज पर जीमण जीमने की उम्मीद में इकट्ठी होकर गवाड़ी की भागल का दरसाव ही अधिक देती है।

अब विचारों में नयापन पर व्यवहार में एक विचित्र प्रकार का संकुचन लगता है। आलोचनावृत्ति की गिरावट प्रशंसा अथवा निंदा के सरलीकरण में जैसे संस्कारित हो गई है। किसी कृति के संबंध में कुछ कहने के लिए भी पढ़ने, सुनने का धीरज नहीं रह गया है। कृति के दर्शन किए बिना ही बेलाग बोलने का हुनर बड़े ताप पर पहुंच गया लगता है। लेखक-पाठक के बीच का संवाद निस्पंद हो गया है। संगोष्ठियों और परिसंवाद के चर्चे वैचारिक शैथिल्य के चलते निष्क्रिय तथा ऊब देने लगे हैं।

सर्जक और सजृन तक अब तथाकथित विचारधारा की तुला से तोलने परखने के परिवेश से बांधे जाने को विवश हो गये हैं। ऐसी बौद्धिक और तंगदिली संस्कृति की टोकरी में साहित्य का शब्द-रंजन देते हमें जरा भी संकोच नहीं हो रहा है। सब ओर धुंधल फैली होने पर भी उस धुंधल के नीचे जो सोने का सूरज छिपा हुआ है उसकी उजास किरण देखने वाले भी कम नहीं हैं।

अभी वह दुनियां भी है जो हमारी अपनी दुनियां है जिसकी संवेदनाएं सूखी नहीं हैं। जिसके सौहार्द का आर्द अभी कठोर नहीं हुआ है। हमारा ठोकर चौराहा भी वही है मगर वहां कोई भी ठोकर खाकर गिरता नहीं है। साहित्य की सुविधा का सौहार्द बढ़ाने में प्रत्येक लेखक, पाठक और उससे जुड़े रसिक मन का आह्वान है।

विश्वास है, मुझे मेरे सहमित्रों, सम्मानितों, सहयोगियों, शुभचिंतकों तथा विविध क्षेत्रों के अनुभवी मनीषा वालों का सतत सहयोग मेरा संबल बनेगा। इन्हीं शुभकामनाओं और मंगल भावनाओं के साथ शब्द-रंजन साहित्य की सुधियों का सौहार्द लिए आप तक पहुंचाता रहेगा।

- डॉ. तुक्तक भानावत

विश्व प्रसिद्ध मोलेला गांव के शिल्पकार माटी की कलाकृति को उभारते हुए।

इन दिनों

आरोप-प्रत्यारोप का बवाल

जनता सब जानती है, देखती है और देख लेगी

आरोप-01: जिला प्रमुख शांतिलाल मेघवाल ने कहा, मैं दलित हूं इसलिए मेरी सुनवाई नहीं होती। जिला कलक्टर मुझे तवज्जो नहीं देते।

आरोप-02: जिला परिषद चुनाव में प्रमुख पद पर दावेदार रहे शंकरलाल मेघवाल ने कहा, ज्यादातर नेता सम्मान के काबिल ही नहीं।

आरोप-03: शंकरलाल मेघवाल ने कहा, एक बड़े नेता के नाम पर स्थानीय दो नेताओं ने मुझसे लाखों रुपए लिए। दोनों ने मुझे जिला प्रमुख बनाने का वादा किया था लेकिन न पद दिया, न पैसे लौटाए।

आरोप-04: जिला परिषद सदस्य कैलाश लखारा ने कहा, चुनाव के दौरान पैसों का लेन-देन खूब हुआ। खुद शंकरलाल ने मुझे लालच दिया कि प्रमुख पद के लिए उन्हें वोट दिया तो वह 5 लाख रुपए देंगे।

पद और प्रभाव की लालसा में उठ रहे ये आरोप-प्रत्यारोप इन दिनों भाजपा में बवाल मचाए हुए हैं। जनता जानती है कि यह अस्थाई और बेअसर बवाल है, जो जितनी तेजी से आया है, उतनी ही तेजी से लौट जाएगा। बड़ों का कुछ घटेगा नहीं, छोटों का कुछ बढ़ेगा नहीं। ज्यादा से ज्यादा जांच कर ली जाएगी और उसे 6 साल के लिए निलम्बित कर दिया जाएगा, जिसके निलम्बन से पार्टी पर ज्यादा असर न पड़ता हो। लेकिन, जनता यह भी जानती है कि आग लगे बिना धुआं नहीं उठता।

आग लगी जरुर है। इसीलिए जनता चुप है। वह बोलेगी नहीं। वह बोलती भी

(शेष पृष्ठ सात पर)

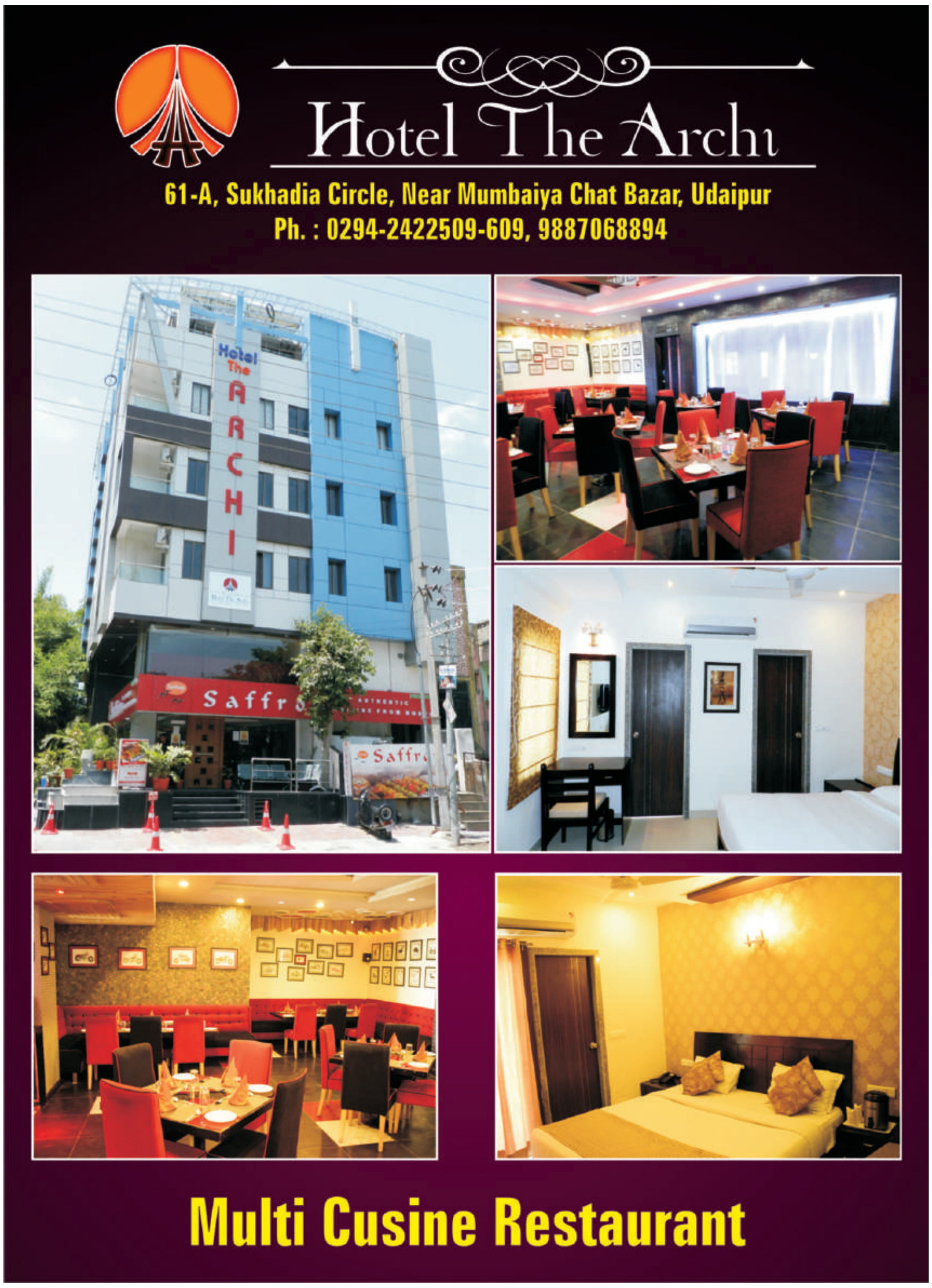

स्मृतियों के शिखर (1) : डॉ. महेन्द्र भानावत

कालाकांकर के साहित्य रसज्ञ सुरेशसिंह

भारत के विविध क्षेत्रों के साहित्य रसज्ञों से समय-समय पर डॉ. भानावत से हुए पत्राचार द्वारा साहित्य, संस्कृति, कला तथा जनधर्मिता के विविध पक्षों पर जो वैचारिक आदान-प्रदान हुआ उससे संबंधित धारावाहिक लेखमाला।

कालाकांकर के राजपुरूष सुरेशसिंह से मेरा पत्राचार संभवत: रंगायन को लेकर हुआ। भारतीय लोक कलामंडल से प्रकाशित 'रंगायन' का उल्लेख उन्होंने अपने पत्रों में बार-बार किया। जब मैंने पीछोला पाक्षिक प्रारंभ किया तो उसे भी भेजता रहा। अपने कुछ प्रकाशन भी भेजे। उन्होंने भी मुझे अपने प्रकाशन भेजे, खासकर यादों के झरोखे। उनके लिखे मेरे पास बारह पत्र हैं। ये सन् 1979 से लेकर 1987 के मध्य के हैं।

सुरेशसिंह साहित्य रसज्ञ और संस्कृतिचेता थे। कलामंडल के कार्यों के वे प्रशंसक थे। जो भी लेखादि उन्हें ठीक लगते, वे तत्काल अपने विचारों से अवगत कराते और यह महसूस करते कि कलामंडल जैसे संस्थान प्रत्येक प्रांत में हों ताकि वहां की पुरातन संस्कृति को ठीक से संरक्षित, संयोजित किया जा सके। एक पत्र में उन्होंने लिखा- ''रंगायन नियमित रूप से मिलता है। पढ़कर बड़ी प्रसन्नता होती है साथ ही यह दुख भी हो रहा है कि हमारे प्रदेश में इस प्रकार की कोई ऐसी संस्था नहीं है जो लोकगीतों तथा जनमानस की वास्तविक तस्वीर हमारे नवयुवकों के दे सके। आपके इस दिशा में इतने महत्वपूर्ण कार्य के लिए हम सब आपके आभारी हैं।''

(20 दिसम्बर 1982 के पत्र से)

कुछ ऐसी ही पीड़ा उन्होंने अपने 26 मार्च 1981 को लिखे पत्र में व्यक्त की। लिखा- ''रंगायन का फरवरी का अंक मिला। 'राजस्थानी लोकमंच की प्रवृत्तियां' शीर्षक आपका लेख बहुत सुन्दर है। उससे राजस्थान के लोकजीवन की बहुत सी जानकारी सहज में ही प्राप्त हुई। हम लोग अपनी प्राचीन संस्कृति को एकदम भूलते जा रहे हैं। काश, हमारे प्रदेश में भी ऐसी कोई संस्था होती जो यहां की लोककलाओं पर कुछ काम करती। स्व. रामनरेशजी त्रिपाठी ने बड़ा परिश्रम करके लोकगीतों का संकलन किया था लेकिन वे अकेले कितना करते फिर भी उन्होंने जितना कार्य किया वह भुलाया नहीं जा सकता।''

सुरेशसिंह आंखों की तकलीफ से काफी परेशान रहे। डाक्टरों ने उनको पढ़ने-लिखने से मना कर रखा था फिर भी वे पत्रों का उत्तर देने में चूक नहीं करते। एक पत्र में उन्होंने लिखा-''मेरी आंखों का दर्द वैसा ही है। थोड़ा भी लिखने-पढ़ने से दर्द होने लगता है। गीचड़ भी काफी आता है। डाक्टरों ने लिखने-पढ़ने पर प्रतिबंध लगा दिया है लेकिन यह मेरे मन की बात नहीं। मित्रों के पत्रों का उत्तर न देना भी उचित नहीं जान पड़ता फिर भी पढ़ना-लिखना कम कर दिया है।'' इसी पत्र में उन्होंने लिखा- **''जीवन में कभी भेंट होगी या नहीं, यह तो नहीं जानता लेकिन पत्रों द्वारा ही मिलते रहें, यही क्या कम है। इसी प्रकार स्नेह भाव रहे।''**

(1 दिसम्बर 1980 का पत्र)

सुरेशसिंहजी ने मुझे 'यादों के झरोखे' पुस्तक भेजी तो मैंने भी उन्हें 'कोई-कोई औरत, मेंहदी राचणी तथा मरवण मांडे मांडणा' पुस्तक भेजी। इस पर उन्होंने 25 जनवरी 1981 को इन पुस्तकों की प्राप्ति का पत्र लिखा- ''आपको मेरी पुस्तक पसंद आई, यह आपकी कृपा ही है। **मैं अपने को बड़ा भाग्यशाली समझता हूं कि मुझे देश की महान विभूतियों के चरणों के निकट बैठने का सौभाग्य प्राप्त हुआ और आप जैसे सहृदय मित्रों से परिचित होने का मौका मिला।**'' पत्र के अंत में बड़े विनीत भावों से उन्होंने लिखा- **''अंत में एक प्रार्थना है, इस अकिंचन के नाम के आगे श्रद्धेय आदि न लगावें। सुरेशसिंह काफी है।''**

पत्र के पीछे की ओर पुनश्च के अन्तर्गत सुरेशसिंहजी ने लिखा- ''आपकी मेंहदी रचानेवाली पुस्तक मेरी भतीजी को इतनी पसंद आई कि वह एक झपट्टे में ही उसे ले भागी। रंगोली या अल्पना वाली पुस्तक (मरवण मांडे मांडणा) मेरी पत्नी प्रकाशवती को बेहद पसंद है। इसे उन्होंने संभाल कर रख छोड़ा है और आपको धन्यवाद तथा वन्दन लिखाया है।'' **भाई सुरेश**

सुरेशसिंहजी ने अपने यहां साहित्य की कई महान विभूतियों को आमंत्रित कर उनकी मेहमानवाजी की। सुमित्रानंदन पंत ने तो ग्रीष्म की चांदनी रात में वहां नौका विहार कर चांदनी रात में नौका विहार शीर्षक कविता लिखी। यह कविता वर्षों तक कॉलेजों में पढ़ाई जाती रही। मैंने भी इसे पढ़ी और बताया गया कि यह कविता विश्व-साहित्य की श्रेष्ठतम कविताओं में से एक है। इसके कारण रचनाकार पंतजी ही अमर नहीं हुए, कालाकांकर का राजभवन भी अमर हो गया। सुरेशसिंहजी ने यादों के झरोखे में पंतजी पर भी एक संस्मरण लिखा। जब मैंने उन्हें इस संस्मरण को लेकर पत्र लिखा तो उत्तर में उन्होंने 27 मई 1979 के पत्र में लिखा-

''आपको स्व. पंतजी के संस्मरण पसंद आये, यह आपकी कृपा ही है। इसी बहाने आपसे परिचय हो गया। यह मेरा सौभाग्य है। 'नक्षत्र' वाले लेख में जिस नहान पर्व का वर्णन है वह मकर संक्रांति का नहान पर्व है। चूंकि कालाकांकर गंगा के तट पर बसा है, इससे यहां अमावस्या और पूर्णिमा को बाहर से काफी लोग गंगा-स्नान को आते हैं। मकर संक्रांति के दिन तो हजारों की भीड़ हो जाती है।'' चूंकि 'नक्षत्र' ऐसे स्थान पर है जिसके नीचे से कालाकांकर का प्रवेश द्वार है और उसी से होकर सड़क गंगा-घाट तक जाती है। इससे भी श्री पंतजी को ऊंचे टीले पर स्थित 'नक्षत्र' में बैठकर मेले की भीड़ देखने का अवसर मिलता था और उन्होंने उसी को देखकर 'नहान' वाली कविता लिखी थी। राजस्थान के सांगोद के नहान की तरह यहां कोई नहान पर्व नहीं होता।

आपका
सुरेशसिंह

सुरेशसिंहजी का एक पत्र मुझे लखनऊ से लिखा मिला जब उनकी पत्नी गंभीर रूप से बीमार होने के कारण वहां ले जाई गईं। सुरेशसिंहजी ने 17 कैसरबाग से 6 सितम्बर 1985 के पत्र में बड़े दुखी मन से मुझे सूचना दी- ''मैं इधर बड़ी मुसीबत में पड़ गया था। मेरी पत्नी प्रकाशवती गंभीर रूप से अस्वस्थ हो गई थी। हम लोग बेहोशी की हालत में किसी प्रकार लखनऊ लाये जहां उनका ठीक से उपचार होने के कारण उनकी जान तो बच गई लेकिन वे बहुत कमजोर हो गई हैं। लगभग 5 महीने हो रहे हैं उनका इलाज होते, तब से मैं यहीं हूं। अभी लगभग दो महीने तो यहां रहना ही होगा।''

इस पत्र के बाद लगभग दो वर्ष व्यतीत हो गये, मुझे सुरेशसिंहजी का कोई पत्र नहीं मिला। मैं यह समझ बैठा कि अब प्रकाशवतीजी धीरे-धीरे स्वस्थ हो रही होंगी और वे उनकी सेवासुश्रुषा में लगे होंगे लेकिन मैं दीवाली पर अवश्य कार्ड भेजता रहा। अचानक एकदिन मुझे उनका लिखा अन्तर्देशीय मिला। इस पत्र में पत्नी के निधन के कारण वे काफी अवसाद लिये थे और स्वयं भी जैसे जीवन को भार समझ बुझ जाना चाह रहे थे। उन्होंने लिखा-

परमप्रिय भाई **कालाकांकर-229408**
वंदन **29 अक्टूबर 1987**

आपका भेजा हुआ दीपावली का कार्ड मिला। धन्यवाद। आपकी मुझ पर निरंतर कृपा और स्नेह रहा है। यह मेरा सौभाग्य ही है। भाई, आजकल मैं बहुत दुखी हूं। शायद आपको न मालूम हो 28 मई को मेरी जीवनसंगीनी प्रकाशवती का स्वर्गवास हो गया। दीपावली के ही दिन उनका जन्म हुआ था और दीपावली के ही दिन हम दोनों का विवाह भी। इसी कारण हम लोग इस उत्सव को बड़े धूमधाम से मनाते थे। प्रकाश बहुत व्यस्त रहती थी कि कहीं मकान का कोई कोना दीपक के बिना न रह जावे। पर इस बार तो मेरे लिए सब सूना-सूना सा हो गया है। **घर-घर में दीवाली थी, मेरे घर में अंधेरा। बहुत जी ऊबता है। जिनके साथ जीवन के 50-60 वर्ष बिताये थे और जो छाया की तरह मेरे साथ रहती थी उनका अचानक चला जाना बहुत खलता है। अब जीवन में कोई दिलचस्पी नहीं रह गई है। अब तो यही सोचता हूं कि जल्दी ही परमात्मा मुझे भी बुला ले।** क्योंकि-

''यूं जिन्दगी गुजार रहा हूं तेरे बगैर,
जैसे कोई गुनाह किये जा रहा हूं मैं''

और क्या लिखूं, कुछ लिखा नहीं जाता। क्षमा करें। आशा है, आप सानंद और प्रसन्न हैं। नववर्ष आपके लिए मंगलमय हो, यही कामना है।

शोकाकुल भाई
सुरेशसिंह

अपने छलकते आंसुओं में मैंने कई बार यह पत्र पढ़ा। सोच नहीं पाया कैसे उन्हें लिखूं ! क्या लिखूं! वे वैसे भी घने अवसाद में हैं। पत्र पढ़कर न जाने कितना अवसाद उन्हें घेर लेगा।

सामान्य में भी अति सामान्य थे प्रेमचंद : जैनेन्द्र

प्रेमचंद पर बहुत कुछ लिखा गया और आगे भी लिखा जाता रहेगा। महान साहित्यकारों की यही विशेषता होती है कि उनका साहित्य किसी काल विशेष में बंधा सीमित नहीं होता। वह शाश्वत होता है और हर युग में अपनी अहम भूमिका देता है। प्रेमचंद ने अपनी लेखनी के माध्यम से जो देन दी है वह बड़ी जबर्दस्त कही जायेगी। अपने जीवन में तो वे उस तरह के व्यक्ति नहीं थे।

प्रेमचंद की देन इतनी विशाल है कि उनके प्रकाश में हम इस भ्रम में पड़ सकते हैं कि वे कोई अत्यंत प्रतिभाशाली व्यक्ति रहे होंगे। प्रतिभाशालियों की चमक जितनी जल्दी प्रकाशित होती है उतनी ही जल्दी बुझ जाती है। प्रेमचंद ने विशिष्ट बनने से सदा इन्कार किया। सामान्य में भी वे अति सामान्य थे। उन्होंने पाठक को चमत्कृत करने, अभिभूत करने अथवा प्रभावित करने की दृष्टि से कुछ नहीं लिखा।

साहित्य के माध्यम से सब लोग अपनी गरिमा तथा महिमा पहुंचाना चाहते हैं। प्रेमचंद ने ऐसा कुछ नहीं किया। उनके साहित्य में स्वस्थता है। प्रमुखता है पर चमक दमक नहीं है। लोग यह समझे कि जो मूल्यवान है वह अहमता में नहीं, सहजता में प्राप्त होता है। प्रेमचंद को उनकी सादगी, सहृयता, सज्जनता और सामान्य बने रहने के बहाने ही महान बना दिया।

-22 अप्रेल 1980 को उदयपुर में हुई भेंट के दौरान जैसा जैनेन्द्रजी ने डॉ. महेन्द्र भानावत को बताया।

सूक्ष्मतम स्वर्णशिल्पों के बेजोड़ कीर्तिकार इकबाल सक्का

-डॉ. तुक्तक भानावत-

उदयपुर के इकबाल सक्का गत तीन-चार दशक से लगातार अपने द्वारा निर्मित सूक्ष्म से सूक्ष्म स्वर्ण-शिल्पों के निर्माण के लिए सुख्यात बने हुए हैं। गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड हो चाहे लिम्का बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड, यूनिक बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड हो या फिर एशिया, इंडिया बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड ; सब में उन्होंने अपनी यादगार निर्मितियों से श्रेष्ठतम शिल्पकार के रूप में जो रिकॉर्ड कायम किये उस पर सभी को गर्व होना स्वाभाविक है। यही नहीं, वर्ल्ड रिकॉर्ड्स् इंडिया और वर्ल्ड अमेजिंग रिकॉर्ड होल्डर के रूप में भी इन्होंने शीर्ष रूप में अपना रिकॉर्ड दर्ज कराकर सबको विस्मित कर दिया है।

इनके द्वारा स्वर्ण निर्मित कलाकृतियां समसामयिक विश्व परिदृश्य का प्रतिनिधित्व करती हुईं साहित्य, संस्कृति, इतिहास तथा जनजीवन के पारदर्शी भारतीय परिवेश को भी प्रतिबिंबित करती हैं। उदाहरणार्थ -

1. कौमी एकता को प्रदर्शित करती भारतीय मानचित्र में दर्शित सबसे कम वजनी ही नहीं, सबसे लंबी 500 मिलीग्राम की चैन।
2. विश्व शांति का संदेश देती सबसे कम वजनी 100 मिलीग्राम की चैन।
3. सबसे छोटी मात्र 0.2 एमएम की एक साथ तीन पतंगें जो बारह नंबर की सुई के छिद्र से निकाली जा सकने की सामर्थ्य लिए हैं।
4. विश्व का सबसे छोटा फाफा वर्ल्ड कप एवं गोल्डन बुट जो सूक्ष्मदर्शी लैंस द्वारा ही दर्शनीय है।
5. हवाई जहाज की उड़ान के सौ वर्ष पूर्ण होने पर पंख लगा वायुयान।
6. चीन में निर्मित विश्व रिकॉर्ड को तोड़ते हुए सबसे छोटी ढक्कन वाली चाय केतली।
7. अमेरिका में निर्मित रिकॉर्ड को तोड़ते हुए रबड़ स्टाम्प का निर्माण।
8. एक एमएम साइज का एड़ी तथा तले सहित सूक्ष्मदर्शी जूता।
9. इंग्लैंड में निर्मित विश्व रिकॉर्ड को तोड़ते हुए एक एमएम का बॉल, गिल्ली सहित क्रिकेट किट।
10. वर्ल्ड कप की प्रतिकृति के साथ क्रिकेट मैदान, बैट, बॉल, विकेट सहित।
11. अमेरिका के विश्व रिकॉर्ड को तोड़ते हुए पानी का घड़ा, डोंगा, गिलास एवं ढक्कन।
12. वर्ल्ड कप के आयोजन वर्ष पर डायमंड लगे वर्ल्ड कप की प्रतिकृति।
13. फीफा वर्ल्ड कप की प्रतिकृति सूक्ष्मतम फुटबॉल सहित।

सोने के अतिरिक्त चांदी द्वारा भी छोटी पतंगें, चरखी, गिल्ली, डंडे, जीरो वाट में चांदी का मैदान और उसमें खेलता गिल्ली डंडा, सितोलिया तथा पतंग उड़ाता आदमी। यही नहीं, राष्ट्रगान की शताब्दी पर दुनियां के देशों को एक इंच के नक्शे में सम्मिलित करते हुए जन गण मन द्वारा विश्व शांति का संदेश।

सक्का बहुत अच्छे गजलकार, गीतकार भी हैं। हिंदी, उर्दू तथा राजस्थानी लेखन में इनका समान अधिकार है। दो जनवरी 1965 को जन्मे इकबाल ने सोने तथा चांदी की सूक्ष्मदर्शी पुस्तक का भी निर्माण किया जिसमें अरबी, संस्कृत में ओम, ईसाइयों का क्रॉस तथा सिक्खों का खंडा उत्कीर्ण किया। यह पुस्तक 64-64 पृष्ठों की है। ऐसी ही पवित्र कुरान शरीफ बनाई।

लेखन के क्षेत्र में इन्होंने रिकॉर्ड तोड़ काम किया है। लंबी उर्दू गजल 'अनवारे गजल' और सबसे लंबा उपन्यास 456 फीट का 'अनोखा दहेज' लिख इंडिया बुक ऑफ रिकॉर्ड होल्डर बने। आकाशवाणी से कहानी, नाटक, कविताएं, गजल, परिसंवादों का प्रसारण तथा कई न्यूज चैनलों में राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर इनसे संबंधित जीवनवृत्त, साक्षात्कार प्रसारित हुए। हिंदी फीचर फिल्म खंजर, पेट्रोल में गीत तथा उदैपुर रो छोरो जैपुर री छोरी में संवाद, गीत, पटकथा के साथ अभिनय किया। इनकी गजलों का गुलदस्ता, करिश्माए ताबिज, राजस्थानी डिस्को तथा सक्काईनामा पुस्तकें प्रकाशित हुईं। उम्मीद है, सक्का अपनी उपलब्धियों के रास्ते हर समय ही स्वर्ण छक्का लगाते रहेंगे।

वंडर सीमेंट साथ : 7 क्रिकेट महोत्सव

प्रधान क्लब वल्लभनगर बना विजेता

उदयपुर । वण्डर सीमेन्ट की ओर से आयोजित क्रिकेट महोत्सव के तहत आयोजित राज्य स्तरीय क्रकेट प्रतियोगिता के सम्भागस्तरीय मैच में प्रधान क्लब वल्लभनगर उदयपुर की टीम विजेता रही जिसने अन्तिम लीग मैच के फाईनल मुकाबले में विरोधी टीम आर्यन क्रिकेट क्लब रावतभाटा चित्तौड़गढ़ को एक विकेट से हरा कर राज्य स्तरीय क्रिकेट प्रतियोगिता में जगह बनाने में कामयाब रही। आर्यन क्रिकेट क्लब ने शानदार चौकों- छक्कों की बरसात करते हुए ताबड़तोड़ 69 रन बनाये लेकिन इस लक्ष्य को विरोधी टीम प्रधान क्लब वल्लभनगर ने एक विकेट शेष रहते अपने नाम कर लिया।

उदयपुर जिला पुलिस अधीक्षक राजेन्द्रप्रसाद गोयल, वंडर सीमेंट के

निदेशक परमानंद पाटीदार, वाइस प्रेसीडेंट मार्केटिंग अनिल झंवर ने विजेता टीम को ट्राफी और 35 हजार रूपये नगद पुरस्कार के तौर पर प्रदान किए। इस अवसर पर जिला पुलिस अधीक्षक ने कहा कि वण्डर सीमेन्ट का ग्रामीण प्रतिभाओं का तराशने का यह काफी सराहनीय प्रयास है क्योंकि ग्रामीण क्षेत्रों में प्रतिभाएं तो काफी होती हैं लेकिन उन्हें उचित मंच नहीं मिल पाता लेकिन वण्डर सीमेन्ट ने इन्हें राष्ट्रीय मंच प्रदान किया है एक बड़ी बात है।

इससे पूर्व नॉकआउट मुकाबले हुए जिनमें 6 टीमों उदयपुर, चित्तौड़गढ़, राजसमन्द, डूंगरपुर, बांसवाड़ा और प्रतापगढ़ की टीमों ने भाग लिया। सात ओवर के इस मैच में पहला मैच उदयपुर और प्रतापगढ़ के बीच हुआ जिसमें उदयपुर ने प्रतापगढ़ को 6 विकेट से हराया। दूसरा मुकाबला चित्तौड़गढ़ और राजसमन्द के बीच हुआ जिसमें चित्तोड़ की टीम ने राजसमन्द को 6 विकेट से हराया। तीसरा मुकाबला डूंगरपुर और बांसवाड़ा की टीम के बीच हुआ जिसमें डूंगरपुर ने बांसवाड़ा को 2 विकेट से हराया। नॉकआउट की तीनों विजेता टीमों के बीच लीग मैच हुए जिसमें पहला मैच उदयपुर और चित्तौड़ के बीच हुआ जिसमें चित्तौड़ 6 विकेट से हार गया। इसके बाद दूसरा मुकाबला चित्तौड़ और डूंगरपुर के बीच हुआ जिसमें डूंगरपुर को 6 विकेट से करारी शिकस्त मिली।

एक साथ किया पांच बीमारियों का ऑपरेशन

उदयपुर। पेसिफिक मेडिकल कॉलेज एंड हास्पीटल में 67 बर्षीय चित्तौडगढ निवासी घनश्याम व्यास का एक साथ पांच बीमारियों का ऑपरेशन करके एक अनूठा रिकार्ड बनाया है। दो घण्टे तक चले इस सफल ऑपरेशन को अंजाम दिया सर्जरी विभाग के हैड डॉ.के.सी.व्यास, डॉ.गौरव वधावन डॉ.प्रकाश औदिच्य एवं अजय चौधरी की टीम नें। डॉ.के.सी.व्यास ने बताया कि इस मरीज के तीन हर्निया जिसमें दो रिकरन्ट एवं एक नए हर्निया के साथ साथ गाल ब्लेडर में स्टोन एवं पेशाब की सकरी नली को चौडा करने के लिए आप्टिकल यूरीथ्रोटॉमी और ब्लेडर नेक इंन्सीजन किया गया। सामान्यत: किसी भी मरीज के एक साथ दो ही बीमारियों के ही ऑपरेशन सम्भवं है लेकिन ये अपने आप में एक रिकार्ड है। डॉ. व्यास ने बताया कि इस उम्र में एक ही मरीज के एक साथ पांच बीमारियों का ऑपरेषन करना बहुत ही रिस्की होता है। लेकिन पीएमसीएच में हाईटेक मॉड्युलर थियेटर एवं सभी संसाधनों के होने से इस तरह के जटिल ऑपरेशनों को करना अब सम्भव हो सका है।

ओर्गन डोनेशन अभियान का आगाज

उदयपुर, । 109 वर्ष पुरानी श्री ऑल इण्डिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस के देश भर से जुटे युवाओं ने शुक्रवार को अंगदान महादान अभियान

का आगाज करते हुए राष्ट्रीय पदाधिारियों ने अंगदान का संकल्प लिया।

कांफ्रेंस के राष्ट्रीय अध्यक्ष महेन्द्र पगारिया ने बताया कि लेकसिटी में देशभर से जुड़े जैन समाज की युवाशक्ति ने अंगदान महादान अभियान का आगाज किया है। इसमें अभियान के प्रारंभ होने के पूर्व ही देशभर में 15 समाज के लोगों ने अपने अंगदान किए हैं। आठ प्रकार के शारीरिक अंगों को दान कर दूसरे विकलांगों को स्वालम्ब बनाने में प्रत्यारोपित करवाये गए। अंगदान के 3 से 6 घंटे के भीतर प्रत्यारोपण आवश्यक है। इस अभियान के आगाज के साथ ही राष्ट्रभर से एकत्र हुए 400 से अधिक राष्ट्रीय, प्रदादेशिक व जिला स्तरीय पदाधिकारियों ने शत-प्रतिशत अंगदान का संकल्प लिया। लेकसिटी से आगाज हुए इस अभियान को देशभर में गांव-गांव, ढाणी-ढाणी तक ले जायेंगे और युवाओं के साथ आमजन को अंगदान के लिए प्रोत्साहित करेंगे।

कांफ्रेंस के राष्ट्रीय मंत्री निमेश राठौड़ ने बताया कि आजादी के पहले से गठित इस संस्था में देशभर के 75 हजार परिवार जुड़े हुए हैं। संस्था ने अप्रेल 2014 में बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ अभियान को संस्था के माध्यम से देशभर में अलग जगाई।

जैन सोश्यल ग्रुप के अध्यक्ष बने शांतिलाल बम्ब

उदयपुर। जैन सोश्यल ग्रुप (मेन) के हुए चुनाव में सबकी पसंद से मुखर समाजसेवी शांतिलाल बम्ब अध्यक्ष बनाये गये। सच्चे मन से सेवा करने वाले को मेवा स्वत: ही, सहज और सेंतमेंत में मिल जाती है। कुल 126 दंपत्तियों से शोभित इस संगठन में कोई उम्मीदवार पद पाने की होड़-दौड़ में सम्मिलित नहीं होना चाहता किंतु जो सबका चहेता बन निखर आता है उसके नहीं चाहने पर भी सबकी चाह को बड़ी संजीदगी और विनीत भाव से स्वीकार्य करना पड़ता है। यह कह बम्ब साहब, क्षण भर के लिए अति भावुक हो गये और कुछ कहते नहीं बने।

उन्होंने बताया कि वे पिछले तेरह वर्ष से इस संगठन से जुड़े हुए हैं। पूरे देश में और विदेश में भी इसकी 400 शाखाएं, 65 हजार सदस्य दंपत्तियों का संबल पाकर समाजसेवा के विविध क्षेत्रों में उल्लेखनीय कार्य कर रही हैं। यह संगठन सकल जैन समाज का प्रतिनिधित्व लिए है। जैन समाज में जो विविध पंथ, सम्प्रदाय, गच्छ, संगठन, संघ आदि हैं उन सबके सदस्य जैन सोश्यल ग्रुप के सम्मानित सदस्य के रूप में अपना योगदान दे रहे हैं और इसी कारण इस संगठन की शोभा तथा सुछवि बनी हुई है।

बम्ब साहब ने बताया कि प्राय: वर्ष भर ही समाजोपयोगी गतिविधियां चलती रहती हैं। मुख्यत: मेडिकल कैंप आयोजित करना, ग्रामीण क्षेत्रों में अध्ययनरत बालकों को आवश्यकतानुसार स्टेशनरी, पुस्तकें तथा पोशाकें सुलभ करना, बीमारू पशुओं की चिकित्सादि में आर्थिक सहयोग करना, टी.बी. हॉस्पिटल में जाकर समय-समय पर रोगियों का फलादि बांटना, देश-विदेश की उपलब्धिमूलक यात्राएं करना तथा जैनत्व के प्रचार-प्रसार के लिए जीवनमूल्यों से जुड़े विविध कार्यों को अंजाम देना जैसे कार्य हमारी प्राथमिकता से जुड़े हुए हैं। इस अवसर पर शब्द-रंजन परिवार की ओर से बम्ब साहब को हार्दिक बधाई।

आओ बैठो बात करो

शब्द रंजन के प्रथमांक, नववर्षांक के लिए देश के ख्यातनाम सुकवि एवं साहित्यश्री बालकवि वैरागी ने अपना संदेश एवं शुभकामनाएं व्यक्त करते हुए जो कविता प्रेषित की उसे यहां प्रकाशित की जा रही है। उन्होंने लिखा-

''21वीं सदी अपनी उम्र के 16वें साल में प्रविष्ट होने जा रही है। अपनी नाबालिग उम्र की सीढ़ियां चढ़ने उसे हम देख रहे हैं। आप सभी को यह परिदृश्य शुभ हो। महात्मा ईसा का नववर्ष 2016 सभी को मंगलकारी सिद्ध हो। मेरी हार्दिक शुभकामनाएं और बधाइयां स्वीकार करें।

मैं पहले से अब कुछ ठीक हूं। छड़ी के सहारे अपनी दिनचर्या पूरी कर लेता हूं। प्रवास और यात्राएं ठिठक गई हैं। कोई विशिष्ट बात हो तो लिखना, कहना या कहलवा देना।''

नववर्ष तुम्हारा स्वागत है,
आओ, बैठो, बात करो।
हम सभी जानते हैं, तुम केवल
एक बरस रह पाओगे।
जिस तरह तुम्हारे बंधु गये, तुम
भी वैसे ही जाओगे।।
इस घर को अपना घर समझो,
शायद है समझोगे भी।
बेशक तुम कुछ दे दोगे, लेकिन
कुछ तो लोगे भी।।
तुम जैसा हमको बतलादो, हम
वैसा बन्दोबस्त करें।
अपना सुख दुख हम सह लेंगे,
पर तुमको क्यों हम मस्त करें।।
शुभ मंगल सबका ही हो,
संकल्प हमारे साथ करो।
फिर लाख बरस तक रहो यहां,
स्वागत है, बैठो, बात करो।।

-बालकवि बैरागी

बधाई के दौर में पुस्तक सौंपी

नववर्ष में किसे क्या दूं, बधाइयां ही बधाइयां। मगर, मेरे गवेषणा-कार्य के प्रेरक, लोकांचल में साक्षात्कार की विधा के मार्गदर्शक और लेखन को सर्वदिशोन्मुख करने और कहने वाले श्रद्धास्पद, लोकवार्ता मनीषी डॉ. श्री महेंद्रजी भानावत को मैं क्या देता ? मेरा शोधप्रबंध नववर्ष पर प्रकाशित रूप में मेरे हाथ में था, यही डॉ. भानावत साहब को सौंपा।

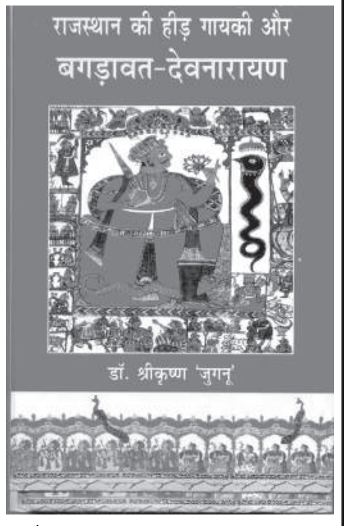

1993 में लिखा मेवाड़ प्रदेश का हीड़ साहित्य शीर्षक शोध प्रबंध राजस्थान की हीड़ गायकी और देवनारायण-बगड़ावत नाम से पुस्तकाकार प्रकाशित हुआ है। यह राजस्थान, मध्यप्रदेश, ब्रज, गुजरात आदि में हीड़, हीड़ो, हूड़ो नाम से गेय उन गाथाओं का अध्ययन है जिनका न कोई पाठ था न ही कोई आधार। हीड़ों के संकलन और संपादन के साथ ही उन पर अध्ययन है। सोचियेगा कि जिस विषय पर प्राथमिक स्तर पर ही कोई जानकारी नहीं थी, उसकी परिकल्पना तैयार कर आठ अध्यायों में शोधप्रबंध का प्रणयन करना था।

श्रद्धेय डॉ. महेंद्रजी भानावत के मार्गदर्शन में 1991 में जब आधार-पत्र तैयार कर राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर को प्रस्तुत किया गया तो मेरे शोध निदेशक, तत्कालीन हिंदी विभागाध्यक्ष डॉ. नरेंद्रजी भानावत (महेंद्रजी के अग्रज) ने कहा था कि हीड़ें कहां हैं ? अगर न मिलीं तो पीएच-डी का क्या होगा ? मगर, जो विचार था, वह होकर ही रहा।

भाई-भाभी, पत्नी व बच्चों के साथ दीवाली के दिनों में मेवाड़ आदि प्रदेशों के गांव-गांव घूमकर हीडें रिकॉर्ड कीं। ध्वन्यांकित सामग्री लिपिबद्ध की और उनका संपादन, कठिन शब्दों का अर्थ और उनमें निहित सामग्री के आधार पर सामाजिक और सांस्कृतिक अध्ययन किया और मूलपाठ सहित उसको उपाधि के लिए प्रस्तुत किया तो न केवल मेरे लिए बल्कि राजस्थानी के मूर्धन्य विद्वानों श्री कोमलजी कोठारी, डॉ. ओमानंदजी सरस्वती, विजयदानजी देथा, श्री नानूरामजी संस्कर्ता, लक्ष्मीकुमारीजी चूंडावत, डॉ. कन्हैयालालजी शर्मा, डॉ. आलमशाह खान, जयचंदजी शर्मा (कई नाम हैं)... सबके लिए कौतुक था। क्योंकि, तब इस विषय पर मेरे कई लेख प्रकाशित हुए थे।

उपाधि मिलने तक इस संबंध में मैंने सैकड़ों खतों के जवाब दिए थे और अधिकांश पत्र विद्वानों के थे। कई तो मुझसे मूलपाठ ही चाहते थे। जवाब में बधाई के साथ लिखा मिलता कि बहुत मौलिक कार्य है। इस विषय पर आपका अधिकार है... यही बात उपाधि देने चंडीगढ़ से आए डॉ. धर्मपालजी मैनी ने भी कही। हालांकि तब तक गुरुदेव डॉ. नरेंद्रजी इस दुनिया को अलविदा कर गए थे और एक महीने के लिए मेरे निदेशक बने थे डॉ. रामप्रकाशजी कुलश्रेष्ठ...।

नववर्ष में इस प्रकाशित ग्रंथ को भेंट करते समय अतीत की ऐसी ही बातें डॉ. महेंद्रजी और मेरे बीच ताजा हो गई। इस ग्रंथ के अनेक पक्षों पर भी चर्चा हुई और खासकर राजस्थान की हीड़ जैसी विधा के पाठ को पहली बार सुरक्षित करने के संबंध में...।

आठ अध्यायों में यह ग्रंथ करीब 400 पन्नों का सचित्र प्रकाशित हुआ है। आर्यावर्त संस्कृति संस्थान (डी. 48, गली नं. 3, दयालपुर, करावलनगर रोड, दिल्ली 110094) के संचालक भाई श्री गोविंदलाल सिंह (मोबा. 09868584456) का धन्यवाद कि नए साल की बधाई के रूप में मुझे मेरा शोधप्रबंध ही सौंप दिया और मैंने इसे त्वदीय वस्तुं समर्पयामि कहते हुए डॉ. महेंद्रजी को सुपुर्द कर दिया। उनका गर्व झलक रहा था और मेरी आंखों में पानी...। जय-जय।

-डॉ. श्रीकृष्ण 'जुगनू'

PIMS

पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज

(मेडिकल काउन्सिल ऑफ इण्डिया के द्वारा मान्यता प्राप्त)

अम्बुआ रोड़, ग्राम उमरडा, तह. गिर्वा, उदयपुर-313015 (राज.)

विश्व प्रसिद्ध चिकित्सकों द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की चिकित्सा सेवाएँ

Dr. A.P. Gupta
Dean & Principal
(Pediatric Deptt.)

Dr. Bhatnagar
(Gynecology Deptt.)

Dr. Mangal
(Gen. Surgery Deptt.)

Dr. B.L. Kumar
(Orthopedic Deptt.)

Dr. Alok Vyas
(Ophthalmology Deptt.)

Dr. Vaishnav
(ENT Deptt.)

Dr. Navendra K Gupta
(Medicine Deptt.)

भर्ती, जाँच, चिकित्सा, ऑपरेशन, जेनेरिक दवाईयाँ निःशुल्क उपलब्ध है।

◆ आधुनिकतम उपकरण ◆ विश्वसनीय जाँच ◆ दवाईयाँ नि:शुल्क ◆ टीकाकरण मुफ्त
◆ सभी ऑपरेशन नि:शुल्क ◆ सभी तरह की जाँचें नि:शुल्क ◆ नसबंदी ऑपरेशन नि:शुल्क

-: नि:शुल्क सुविधाएँ :-

• ओपीडी • चिकित्सकीय सुविधा • वार्ड/आंतरिक सुविधा • माइनर/मेजर ओटी
• फिजियोथेरेपी • प्रयोगशाला सेवाएँ • ईसीजी सेवाएँ • फार्मेसी सेवाएँ एवं
• नि:शुल्क एम्बुलेंस सेवा • नि:शुल्क बस सेवा

24 Hours
EMERGENCY SERVICE

प्रतिदिन 8 से 10 ऑपरेशन रविवार छोड़कर

पेसिफिक अस्पताल, उमरड़ा

+91-9352054115, +91-9352011351, +91-9352011352

'स्मार्ट' idea @ 'स्मार्ट' location

ख्याल आपकी सुरक्षा, सेहत और खुशियों का

• FIRST AID CLINIC • MULTI LEVEL SECURITY • TWO SWIMMING POOLS • GROCERY STORE • GAS PIPELINE • MEDICAL EMERGENCY LIFT • GUEST ROOMS • SENIOR CITIZEN PARK • FTTH - FIBRE TO HOME • BABY DAY CARE CENTRE • REVENUE GENERATING SOCIETY

17 FLOORS

ROYAL RAJVILAS

LUXURY HOMES

3 & 4 BHK FLATS

रु 65 लाख से शुरु

सुख - सुविधा का अंबार

OPEN AIR THEATRE • BASKET BALL COURT • SPACIOUS LIFT CORRIDORS • LIBRARY • HEALTH CLUB • SPA • KIDS INDOOR PLAY AREA • VOLLEYBALL COURT • CYCLING TRACK • BADMINTON COURT • 24 HOURS SECURITY & SURVEILLANCE • BUSINESS CENTER • YOGA • TEMPLE • FOOD ZONE • ROCK CLIMBING • NET CRICKET PITCH • JOGGING TRACK • SKATING RINK • CLUB LOUNGE • EARTHQUAKE RESISTANT STRUCTURE • TODDLERS PARK & SAND PIT • MULTILEVEL CAR PARKING • LANDSCAPED AREAS & PAVED PATHWAYS • BAMS (SOFTWARE) • MULTI PURPOSE HALL

तैयारी आपकी खुशियों की

commu.hub@gmail.com

Site Location

Shobhagpura Circle, 100 Feet Road, Udaipur (Raj.)

Email: info.rrv@gmail.com Website: www.royalrajvilas.in

Project Owned & Developed by Udaipur Entertainment World Pvt. Ltd. CIN : U92490MH2007PTC167302

FURTHER DETAILS

AMIT + 91 9166227744 | BHANU + 91 9166227711

DINESH +91 9166227755

HAPPY TO HELP :

हेल्थ इंश्योरेंस प्लान 'श्रावक आरोग्यम् -फेज 3' लॉन्च

उदयपुर। परमपूज्य नायपद्म सागर महाराज द्वारा भारत में जैन लोगों को बेहतर एवं वहन करने योग्य स्वास्थ्य सेवा उपलब्ध कराने के विजन से प्रेरित जैन इंटरनेशनल ऑर्गनाइजेशन (जेआइओ) ने 'श्रावक आरोग्यम् - फेज 3' प्रोग्राम को पेश किया है। इस उत्पाद को उद्योग में किसी अन्य उत्पाद की अपेक्षा कहीं अधिक लाभों के साथ सभी जैनियों को सामाजिक सुरक्षा व हेल्थकेयर सेवायें प्रदान करने के लिए विशेष रुप से डिजाइन किया गया है।

'श्रावक आरोग्यम् - फेज 3' प्रोग्राम में किसी भी प्रकार के प्री-पॉलिसी मेडिकल चेकअप्स के लिए जोर नहीं दिया जाएगा, जिससे मेडिकल हेल्थ चेकअप की लागत और निषेधों दोनों की बचत होगी। वास्तव में, जैन समुदाय के लिए इस उत्पाद को आसान बनाने के लिए पहले से मौजूद बीमारियों के लिए किसी प्रतीक्षा अवधि का प्रावधान नहीं होगा, जबकि अधिकांश मानक पॉलिसियों में वेटिंग पीरियड 2-4 वर्ष का होता है। इसके अतिरिक्त कैटरैक्ट, आर्थराइटिस एवं हार्निया, इत्यादि जैसे पहले से मौजूद रोगों को पहले दिन से ही इस प्रोग्राम के अंतर्गत कवर किया जाएगा।

जेआइओ के निदेशक डॉ. भरत परमार ने कहा कि अपने परिवारों के साथ 3.2 लाख से अधिक जेआइओ सदस्य श्रावक आरोग्यम् प्रोग्राम के पूर्ववर्ती वर्जन्स के अंतर्गत पहले से ही कवर्ड हैं, जोकि पिछले डेढ़ वर्षों से सफलतापूर्वक संचालित हो रहे हैं। इस प्रोग्राम को जैन डॉक्टर्स एसोसिएशन (जेडीए) के चिकित्सक सफलतापूर्वक प्रबंधित कर रहे हैं और इस स्कीम से अब तक लगभग 30,000 सदस्य लाभान्वित हो चुके हैं। पहले के दो चरणों को मिले असाधारण प्रतिसाद के कारण हम लोग तीसरे चरण को लॉन्च कर रहे हैं। श्रावक आरोग्यम् फेज 3 बेहतरीन लाभों की पेशकश कर रहा है, जोकि इस श्रेणी की किसी अन्य स्कीम से कई गुणा अधिक बेहतर है।

अलायंस इंश्योरेंस ब्रोकर्स प्रा. लि. के एसोसिएट डायरेक्टर अनूप वर्मा ने पॉलिसी की मुख्य विशेषताओं पर कहा कि श्रावक आरोग्यम्- फेज 3 के कुछ पॉलिसी फीचर्स अनूठे हैं और बाजार में मौजूद रीटेल पॉलिसियों में उपलब्ध नहीं हैं। उदाहरण के तौर पर यह एक फैमिली फ्लोटर है, जो पहले से मौजूद बीमारियों के साथ '15' (6 सदस्यों) के परिवार को कवर करता है। इसमें नवजात शिशुओं को पहले दिन से ही कवर किया जाता है और प्रवेश की आयु 80 वर्ष तक है और उसके बाद कवरेज फैसिलिटी जीवन भर के लिए है। इसमें मानसिक रोग, साइबर नाइफ ट्रीटमेंट, स्टेम सेल ट्रांसप्लांटेशन, कोचलियर इम्प्लांट एवं प्रसूति से संबंधित लाभ शामिल हैं। यह पॉलिसीज आयकर अधिनियम की धारा 80डी के अंतर्गत स्वास्थ्य बीमा पॉलिसीज पर लागू कर लाभ के योग्य होंगी। इन बेसिक्स के अतिरिक्त यह प्रोग्राम प्रपोजर को एक व्यक्तिगत दुर्घटना कवर की भी पेशकश करता है। यह लाभ मेडिक्लेम कवर के अतिरिक्त है। प्रपोजर को उसकी मेडिक्लेम पॉलिसी की बीमित राशि के अनुसार 2 लाख, 5 लाख, 10 लाख रुपए का कवर मिलता है।

पीआईएमएस में 100 वर्षीय मरीज का सफल ऑपरेशन

उदयपुर। पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साईन्सेज उमरड़ा में चिकित्सकों ने 100 वर्षीय मरीज का सफलतापूर्वक ऑपरेशन किया है।

पीआईएमएस के वाइस चैयरमैन आशीष अग्रवाल ने बताया कि साकरोदा निवासी धोलाराम (100) का प्रोस्टेट ग्रंथि का दूरबीन विधि द्वारा ट्रांस यूरिथ्रल रिसेप्शन आऊफ प्रोस्टेट ऑपरेशन किया गया। डॉ. ए.एस. चूण्डावत के मार्गदर्शन में निश्चेतना विभाग द्वारा मरीज को एनेस्थेशिया दिया गया। मरीज का ऑपरेशन डॉ. एम.एम. मंगल ने किया। ऑपरेशन के बाद मरीज पूर्वतया स्वस्थ है। उल्लेखनीय है कि 100 वर्ष की उम्र में इस ऑपरेशन और एनेस्थेसिया से खतरा बना रहता है।

मेवाड़ ब्राह्मण शिरोमणि सम्मान समारोह

यूनिक बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड होल्डर महेन्द्र शर्मा हुए सम्मानित

उदयपुर। शहर के एसआईईआरटी सभागार में शनिवार को मेवाड़ ब्राह्मण शिरोमणि सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। इसमें ब्राह्मण समाज के विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय कार्य करने वाले व्यक्तियों का सम्मान किया।

सर्व ब्राह्मण महासभा एवं विश्व ब्राह्मण संगठन के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित इस समारोह की अध्यक्षता विश्व ब्राह्मण संगठन के अध्यक्ष डॉ. वी. के. शेषासाई ने की। मुख्य अतिथि इसी संगठन के राज्य अध्यक्ष सुरेश मिश्रा थे। विशिष्ट अतिथियों में संगठन के जिलाध्यक्ष मथुरेश नागदा एवं संभाग अध्यक्ष भगवानलाल मेनारिया शामिल थे।

डॉ. वी. के. शेषासाई न कहा कि सभी ब्राह्मणों को एक झंडे के नीचे एकत्र होने की आवश्यकता है। रही बात आरक्षण की तो यह एक संवेधानिक मुद्दा है जिसको उचित माध्यमों से हल कराने का प्रयास किया जाएगा। सुरेश मिश्रा ने भविष्य में ब्राह्मण समाज को अपनी पहचान बनाये रखने के लिए सभी ब्राह्मण संगठनों में एकता की आवश्यकता पर बल दिया। इसके अलावा अन्य वक्ताओं एवं आयोजनकताओं द्वारा ब्राह्मण समाज की वर्तमान भूमिका एवं आगामी वर्ष में आयोजित होने वाले कार्यक्रमों की रूपरेखा भी तय की गई। साथ ही इस बात का संकल्प किया गया कि ब्राह्मण समाज को एक होकर अपने अधिकारों की रक्षा के लिए उचित कदम उठाने होंगे।

प्रारंभ में स्वागत भाषण आयोजन समिति के अध्यक्ष दिनेश नागदा ने दिया। धन्यवाद की रस्म सचिव अनिल जोशी ने अदा की।

प्रबंधन से जुड़ी तीन जेबी पुस्तिकाएं

अब सब ओर व्यावहारिक जीवन और ज्ञान-विज्ञान के प्रत्येक क्षेत्र में कुशल कौशल प्रबंधन पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। ऐसे में मुनि मनितप्रभसागर द्वारा लिखित धर्म प्रबंधन, जीवन प्रबंधन एवं मस्तिष्क प्रबंधन नामक तीन जेबी पुस्तिकाएं सहज ही हमारा ध्यान आकृष्ट करती हैं। सूक्तियों, उक्तियों, सूत्रों तथा विचार कणों की ये अनमोल पुस्तिकाएं प्रत्येक को दिशाबोध देती हैं। यथा-

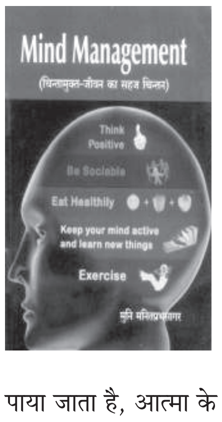

आदमी दम निकलने तक पद, पैसा और प्रतिष्ठा के लिए मन को तैयार करता है पर पूरी जिंदगी में संभवत: एक भी क्षण ऐसा नहीं आता जब दो पल थमकर शांत भाव से मधुर क्षणों में अपने आप से बात करता हो। अपनी खूबियों पर विश्वास करता हो। स्वयं से प्रेम करता हो। समता और समाधिमय मन की कामना करता हो।

(मस्तिष्क प्रबंधन, पृ. 19)

आनंद न दिया जाता है, न लिया जाता है। आनंद तो पाया जाता है, आत्मा के धरातल पर उतरकर।

(धर्म प्रबंधन, पृ. 26)

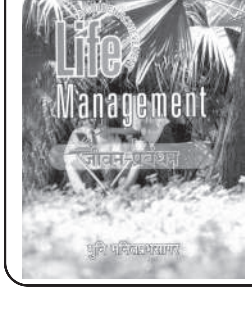

एक आध्यात्मिक-सांस्कृतिक ग्रंथ जीवन की कला, विवेक की रोशनी तथा परेशानी में सकारात्मक चिंतन देता है इसलिए वस्त्र-आभूषणों की अलमारी कम हो तो चलेगा पर किताबों की एक तिजोरी होनी जरूरी है।

(जीवन प्रबंधन, पृ. 53)

शब्दों की रंजना है साहित्य

साहित्य
शब्दों की रंजना है।
शब्दों की शक्तियों
अमिधा, लक्षणा, व्यंजना की।
अमिधा की रेखाओं में
लक्षणा के रंगों से
व्यंजना के भावों
संवेदनाओं की अल्पना है।
साहित्य
शब्दों की रंजना है।
अमिधा की बेलों पर, पेड़ों पर
लक्षणा के फूलों से सजा
व्यंजना की महक से महकता
भावनाओं, संवेदनाओं का उपवन
है।
साहित्य
शब्दों की रंजना है।
रचनाकार के उद्गार
शब्दों के कॉचों में
सामाजिक यथार्थ की
अंगूठे की आरसी
हाथों का कंगना है।
साहित्य
शब्दों की रंजना है।।

-मालती शर्मा

रम्य रचना — आदत डाललें, अच्छे के लिए

डॉ. पूरन सहगल

'बस आदत डालले।' यह एक सूत्र वाक्य है। इसका सीधा अर्थ हुआ समायोजन। परिस्थितियों के अनुसार ढल जाना या समझौता कर लेना। इस सूत्र वाक्य को मैंने अपने चरित्र में समाहित कर लिया।

मैं जब संत पीपा पर शोधार्थी था तब बीकानेर जाना हुआ। वहां की अनूप संस्कृत लायब्रेरी के अनुभव बहुत कड़वे रहे। बीकानेर के वरिष्ठ मित्र सांवरलालजी तंवर ने कहा - ''शोध करना है तो ऐसी उपेक्षाओं को सहन करने की आदत डाललो।'' मैं बाबूलाल शर्मा द्वारा की गई अपनी उपेक्षा और अपमान को भूल गया। इस सूत्र ने भविष्य में बहुत सहयोग किया। वह उपेक्षा मेरे लिए अपेक्षा बनती चली गई। सन् 1969 का वह संदर्भ सदा याद बनकर प्रेरक बन गया। उसी यात्रा में मुझे अगरचंदजी नाहटा से मिलना था। तलाश करवाई तब आश्वस्त हुआ कि वे बीकानेर में हैं और वहीं मिलेंगे। उनसे मिलने गया। बहुत सहज और सरल व्यक्ति लगे। एक कमरे में गादी पर तीन-चार लोगों के बीच बैठ नाहटाजी सबसे अलग-अलग विषयों पर एक साथ चर्चा कर रहे थे। अद्भुत लगा।

मैं भी बैठ गया। अपनी बारी की प्रतीक्षा करने लगा। वैशाख-जेठ का मध्य। गर्मी बीकानेर की और वैसी ही प्यास। तभी एक महिला पानी का एक छोटा सा लोठा लेकर आई। नाहटाजी ने एक घूंट पिया और आगे बढ़ा दिया। मुझ तक आते-आते एक घूंट ही पानी बचा था। मैंने एक घूंट घटक लिया। कंठ भी नहीं भीगा। अतृप्त आंखों से इधर-उधर देखा। नाहटाजी समझ गए। बोले- ''राजस्थान में काम करना है तो आदत डाललो। पानी को प्राण समझो। जैसे हम प्राणों की रक्षा करते हैं वैसे पानी की करो।'' मैं समझ गया। यह मालवा नहीं, मारवाड़ है। यहां पानी ढोला नहीं, सहेजा जाता है। रहीम याद आ गए- ''रहिमन पानी राखिए बिन पानी सब सून।''

बात उन्हीं दिनों की है। एक गाड़ोलिया परिवार के वहां मैं मेहमान था। मित्रभाव था। मकई की रोटी और दही चटनी का भोजन। गाड़ोलिया बोला- ''मेरी घरवाली नहाले फिर खाना मिलेगा।'' सामने गाड़ी के पीछे गाड़ोलन नहा रही थी, चारपाई पर बैठकर। एक तगारी पानी लेकर गई। उसी से नहाना था। मुझे तो केवल चारपाई और चारपाई के नीचे रखी एक खाली तगारी ही दिख रही थी। गाड़ोलन ने स्नान किया। उससे ढुला पानी नीचे तगारी में संग्रहीत हो गया। गाड़ोलन ने उस पानी से अपना घाघरा धोया, तगारी में ही निचोड़ा और गाड़ी के आगे छिड़क दिया ताकि धूल नहीं उड़ पाये। एक तगारी पानी और तिहरा उपयोग देख मैं आश्चर्य में था। गाड़ोलिया समझ गया। बोला - ''हमारी तो ऐसी ही आदत हो गई है। ज्यादा पानी कहां से लाएं? न बर्तन न पानी खींचने के साधन। कम सामान में सब करना पड़ता है।''

जब बीकानेर गया था तब बैरागीजी ने कहा था- ''बीकानेर जा रहे हो, श्री कन्हैयालाल सेठिया वहीं हैं। मिलकर आना। बहुत बड़े साहित्यकार हैं।'' मैं उनसे मिलने पहुंचा। पता चला, भीतर बिराजे हैं। तभी एक सज्जन बाहर निकले। परिजन लगते थे। पूछा तो बोले- ''सेठियाजी आज किसी कारण से अवसाद में हैं। नहीं मिलेंगे।'' मैंने कहा- ''मैं मध्यप्रदेश-मालवा से आया हूं। मनासा मेरा नगर है। बैरागी बालकवि का अनुजवत हूं। आप यह सब उनसे कह दीजिए।'' वे सज्जन भीतर गए। लौटकर बोले- ''आ जाइये, बुला रहे हैं।''

बैठक में गया तब वे जोर-जोर के ठहाके लगा रहे थे। मैं चौंक गया। चुपचाप खड़ा रहा। वे शांतचित्त मेरे निकट आए और मेरा हाथ पकड़कर ले गए। बैठक में बिछी गादी पर बैठा कर बोले- ''जब भी आप अवसाद में हों तब जोर-जोर से ठहाके लगाइये। सब ठीक हो जाएगा।'' मैंने कहा- ''ये कैसे संभव है?'' वे बोले- ''सरल है। बस आदत डाललो।'' लगभग आधा घंटा उनके साथ बीता। उनसे मिलकर ऐसा लगा मानो किसी दिव्य पुरूष का सान्निध्य प्राप्त हो गया हो। वे कलकत्ता रहते थे। उनसे यदाकदा पत्राचार होता रहा।

मैंने बैरागीजी को कईबार ठहाके लगाते देखा। जब वे नीमच का विधानसभा चुनाव हारे तब हम सब दुखी, गुमसुम और अवसादित थे। जब उनसे भेंट हुई तब वे ठहाके लगा-लगा कर फोन पर किसी मित्र से बात कर रहे थे।

ठहाके लगाने पर याद आते हैं उदयपुर के डॉ. महेन्द्र भानावत। मैं उन्हें अनके वर्षों से जानता हूं। मेरी जब उनसे पहली मुलाकात हुई तब मैं उदयपुर में अपनी बीमार पत्नी को भर्ती करवाकर अत्यंत अवसाद में था। वे अस्पताल आए। हम दोनों अपरिचित। भेंट होने पर बोले- ''इतने हताश न हों कि पत्नी को बचाते-बचाते आप भी यहीं भर्ती हो जॉय। परिस्थितियों से समझौता भले न करें किंतु उन्हें अपने अनुकूल बनाने का प्रयत्न तो करें।'' मैंने कहा- 'कैसे संभव है?' बोले- 'इसके लिए धीरे-धीरे आदत डालनी होती है।'' उन दिनों वे स्वयं भारतीय लोककला मंडल से अपने हितों के लिए संघर्ष कर रहे थे। ठहाके लगाते उन्होंने अपनी गाथा सुना दी। मुझे लगा, गजब हैं ये।

हिन्दुस्तान जिंक ने स्वर्ण जयन्ती मनाई

50 साल में विश्व की अग्रणीय जस्ता-सीसा कंपनियों में शामिल, आगामी वर्षों में 8,000 करोड़ रुपये के निवेश की तैयारी

उदयपुर। भारत के एकमात्र एवं विश्व के एकीकृत जस्ता-सीसा-चांदी उत्पादक हिन्दुस्तान ज़िंक ने 10 जनवरी, 2016 को स्वर्ण जयन्ती के 50 स्वर्णीम वर्ष पूरे कर लिए। वेदान्ता समूह की जस्ता-सीसा-चांदी उत्पादक कंपनी हिन्दुस्तान ज़िंक 50 वर्ष पूरे होने पर स्वर्ण जयन्ती समारोह मनाया। कंपनी अपने अगले चरण में अपनी खदानों एवं स्मेल्टर्स के विस्तार एवं विकास तथा नया संयंत्र स्थापित करने के लिए 8,000 करोड रुपये का निवेश करेगी।

वेदान्ता समूह के चेयरमैन अनिल अग्रवाल ने भारत में जिंक की पर्याप्त उपलब्धता पर खुशी व्यक्त करते हुए कहा कि वर्ष 2002 में विनिवेश कार्यक्रम के तहत जब हमने हिन्दुस्तान जिंक का अधिग्रहण किया तब हमारा एकमात्र लक्ष्य भारत को जस्ता में आत्मनिर्भर बनाना था। हमें गर्व है कि कंपनी आधुनिक पर्यावरण अनुकूल तकनीक, क्षमता विस्तार एवं निरंतर खोज कर, बड़े निवेश द्वारा, पांच गुना उत्पादन बढ़ाने में सक्षम रही है तथा इसके पश्चात भी कंपनी के पास 30 से अधिक वर्षों के लिए प्राकृतिक संसाधनों के भंडार उपलब्ध है।

प्रेसीडेन्ट (ग्लोबल बिजनिस ज़िंक्र) अखिलेश जोशी ने बताया कि पिछले वर्षों में 12,000 करोड़ रुपये का निवेश कर हिन्दुस्तान ज़िंक ने ना सिर्फ परिसम्पत्यिों का विकास किया है बल्कि शेयरधारकों को भी लाभ पहुंचाया है। विनिवेश के समय हिन्दुस्तान ज़िंक के पास कैप्टिव पावर और पवन ऊर्जा फार्म नहीं थे। आज हिन्दुस्तान ज़िंक 474 मेगावाट कैप्टिव थर्मल पावर तथा 274 मेगावाट पवन ऊर्जा का उत्पादन कर रहा है। जोशी ने भारत सरकार, राजस्थान सरकार व हिन्दुस्तान ज़िंक वर्कर्स फेडरेशन को धन्यवाद दिया, जिनके सहयोग से हिन्दुस्तान ज़िंक आज विश्व स्तरीय कंपनी है।

ज़िंक के कार्यकारी अधिकारी सुनील दुग्गल ने बताया कि यद्यपि भारत में जस्ते का खनन 2500 वर्ष से अधिक पुराना है, उदयपुर से लगभग 45 किलोमीटर दूर जावर में खनन के प्रचीन रिटार्टस अब भी देखे जा सकते है। भारत में जस्ते धातु के उपयोग के बारे में अधिक जानकारी नहीं थी। अभी भी हम नये क्षेत्रों की खोज कर रहे हैं जो उपभोक्ताओं को जोड़ने एवं देश के सकल घरेलू उत्पाद को बढ़ाने में सहायक होगा।

उदयपुर में रैडिसन होटल का शुभारंभ

उदयपुर। रिद्धि-सिद्धि ग्रुप के पांच सितारा रैडिसन होटल का उद्घाटन लेकसिटी मॉल में कार्लसन रेजीडोर होटल ग्रुप के चीफ एक्जीक्यूटिव ऑफिसर दक्षिण एशिया राज राणा, रिद्धि सिद्धि ग्रुप के प्रबंध निदेशकद्वय श्याम बी. गुप्ता और सौरभ टांक द्वारा किया गया।

इस अवसर पर आयोजित प्रेसवार्ता में कार्लसन रेजीडोर होटल ग्रुप के चीफ एक्जीक्यूटिव ऑफिसर दक्षिण एशिया राज राणा ने कहा कि उदयपुर शहर में रैडिसन हमारा दूसरा होटल है और रिद्धि सिद्धि समूह से साझेदारी कर हम सम्मानित महसूस कर रहे हैं। यह होटल मौके की जगह पर है और शहर के प्रमुख आकर्षणों सिटी पैलेस, लेक पिछोला, लेक फतेहसागर के पास स्थित है। होटल हवाई अड्डे से कार के जरिए एक घंटे से भी कम और रेलवे स्टेशन से 10 मिनट की दूरी पर है।

रिद्धि सिद्धि ग्रुप के प्रबंध निदेशक श्याम बी गुप्ता ने कहा कि भारत में यहां हमारा पहला हॉस्पीटैलिटी उपक्रम है और हमें कार्लसन रेजीडोर होटल समूह के साथ गठजोड़ करके खुशी है। हमें यकीन है कि उनकी मैनेजमेंट और विपणन की सुविज्ञता से होटल को लाभ होगा।

रिद्धि सिद्धि ग्रुप के प्रबंध निदेशक सौरभ टांक ने कहा कि होटल का सिटी सेंटर का लोकेशन शानदार है तथा बिजनेस और लीजर ट्रैवलर्स के लिए आदर्श है। मैं कार्लसन रेजीडोर समूह के साथ आपस में लाभप्रद लंबी अवधि के संबंद्ध की उम्मीद करता हूं। रैडिसन उदयपुर में सेंट्रल हीटिंग और कूलिंग के साथ 56 सुसज्जित कमरे और सुइट हैं।

परिणीति चोपड़ा ने 5 गुणा बेहतर 'न्यू व्हिस्पर अल्ट्रा' लॉन्च किया

उदयपुर। भारत की महिलाओं को सशक्त बनाने, और महीने के उन 5 दिनों में खुल कर जीने के लिये, व्हिस्पर इंडिया ने न्यू व्हिस्पर अल्ट्रा लॉन्च किया है। यह नया क्रांतिकारी पैड साधारण पैड्स की तुलना में 5 गुणा बेहतर प्रोटेक्शन प्रदान करता है। बॉलीवुड की अभिनेत्री परिणाति चोपड़ा और मंदिरा बेदी ने न्यू व्हिस्पर अल्ट्रा को लॉन्च किया। इसके साथ ही उन्होंने सैनिटरी नैपकीन को समाचारपत्र में छुपाने के सबसे प्रचलित पीरियड मिथक पर बेबाक विचार व्यक्त किये, उन्होंने न्यू व्हिस्पर अल्ट्रा पैक को ढ़कने के लिये इस्तेमाल किया गया बड़ा सा समाचार पत्र फाड़कर दिखाया।

परिणीति चोपड़ा और प्रसूति रोग विशेषज्ञ डॉ नंदिता पलशेतकर द्वारा किये गये दमदार निरूपण के माध्यम से एक ऐसा नवाचार देखने को मिला, जिसे आज से पहले कभी नहीं देखा गया था। इन्होंने व्हिस्पर इंडिया के नये उत्पाद के फायदों पर जोर दिया। इसमें पैड के टॉप शीट अपग्रेड और बूस्टेड कोर को दिखाया गया जोकि स्वच्छ अहसास के लिए अधिक अवशोषण और बेहतर ड्रानेस की पेशकश करते हैं। लॉन्च के दौरान अदाकारा परिणीति चोपड़ा ने भारत में महिलाओं को अपने सपने महसूस करने और जिंदगी में कभी न रुकने की जरूरत पर जोर दिया।

परमाणु ऊर्जा जन जागरुकता अभियान अब अंतिम चरण में

बासवाड़ा : न्यूक्लिर पावर कार्पोरेशन ऑफ इंडिया लि. द्वारा चलाये जा रहे परमाणु ऊर्जा जन जागरुकता अभियान के अंतर्गत जनता को परमाणु ऊर्जा की उपयोगिता, व्यवहारिकता और सुरक्षा के बारे में एग्जिविशन ऑन व्हील्स नामक चलित प्रदर्शनी बस को एन.पी.सी.आई.एल. के वर्तमान और भावी संयत्रों के निकटवर्ती क्षेत्रों में आने वाले गांवों में रवाना किया गया था। जिसके अंतर्गत चलित प्रदर्शनी ने बांसवाडा तहसील, छोटी सरवन, बागीडोरा, तलवारा, गढ़ी आदि तहसील में जाकर, कॉमिक्स, फिल्म आदि सामग्री के द्वारा एक आम सरल भाषा में लगभग 85000 लोगों को विस्तृत एवं लाभकारी जानकारी दी। राजस्थान में अपने चौथे व अंतिम चरण में कुशलगढ़ और सज्जनगढ़ तहसील में लगभग 45 से 50 गांवों में जाकर संपर्क व प्रदर्शन किया एवं भारी मात्रा में लोगों ने सराहा इस दौरान अभियान पर आधारित कई प्रतियोगिताओं का आयोजन भी किया गया।

जलदाय विभाग और केयर्न इंडिया के मध्य हुआ एमओयू

उदयपुर। प्रदेश के गुणवत्ता प्रभावित क्षेत्रों में स्वच्छ पेयजल उपलब्ध कराने की कडी में केयर्न इंडिया और जलदाय विभाग के मध्य एक एमओयू साइन हुआ, जिसके तहत केयर्न इंडिया आने वाले तीन सालों में बाडमेर जिले में 333 आरओ प्लांट लगाएगी, जिससे 800 से अधिक गांवों को शोधित जल उपलब्ध हो सकेगा।

जलदाय मंत्री श्रीमती किरण माहेश्वरी के निर्देश पर शासन सचिवालय में गुरुवार को प्रमुख शासन सचिव जेसी महान्ति और केयर्न इंडिया के सीएसआर हेड मनोज अग्रवाल की उपस्थिति में जलदाय विभाग के मुख्य अभियंता ग्रामीण अखिल कुमार जैन और केयर्न के सिद्धार्थ बालाकृष्णन ने एमओयू पर हस्ताक्षर किए। सहमति पत्र के मुताबिक आगामी तीन वर्षों में बाडमेर जिले में 333 स्वच्छ पेयजल प्लांट स्थापित करने की योजना है। ये प्लांट आस पास के गांवों तक अधिकतम पहुंच के हिसाब से स्थापित होंगे तथा वितरण को सुगम बनाने के लिए कई स्थानों पर वाटर एटीएम भी लगाए जाएंगे।

उल्लेखनीय है कि इन प्लांट्स की स्थापना का खर्च केयर्न इंडिया से जुडा केयर्न एंटरप्राइज सेंटर वहन करेगा, जबकि जलदाय विभाग भूमि, जल स्त्रोत तथा विद्युत उपलब्धता में ग्राम पंचायत की सहायता से सहयोग करेगा। इस प्रोजेक्ट में वाटर एटीएम कियोस्क की स्थापना गांवों में ऐसे स्थानों पर की जाएगी, जहां ग्रामीण आसानी से पहुंच सकें। ये जल कियोस्क ग्राम जल समिति द्वारा संचालित किए जाएंगे। ग्रामीण न्यूनतम भुगतान पर आरओ युक्त पानी प्राप्त कर सकेंगे।

जनता सब जानती है....

(पृष्ठ एक का शेष)

नहीं। सिर्फ मतदान करती है। राजनीतिक दलों, जनप्रतिनिधियों और नेताओं को यह बात हमेशा याद रखनी चाहिए लेकिन वे नहीं रखते। वे सिर्फबोलते हैं, याद नहीं रखते। जबकि, जनता सिर्फ याद रखती है, बोलती नहीं है।

अब वो दौर नहीं रहा जब पांच साल का किया-धरा चुनाव के दौरान पल में बिसरा दिया जाय। अब याद रखने और हिसाब चुकता करने का जमाना है। यह सोशियल मीडिया का दौर है। चुनाव में एक-एक बात सोशियल मीडिया के जरिये दोहराई जाती है। जनता ही जनता को याद दिलाती। उन यादों में ये आरोप भी होंगे, जो इन दिनों नित नए उठ रहे हैं।

आज आरोप उठ रहे हैं, तब सवाल उठेंगे। यह कि जिस 'आग' से 'धुआं' उठा, वह आग किसने-कब-क्यों-कितनी लगाई थी? चुनाव तो आते हैं, आएंगे भी। तब जनता के पास जवाब तैयार होगा, वोट के रुप में। तब वह जज होगी। पांच साल की सुनवाई के बाद फैसला देने वाली अदालत की जज। वह कांग्रेस को परे रहने का आदेश दे सकती है तो भाजपा को भी दे सकती है। ऐसे में आवश्यता है एक-एक आरोप की सच्चाई खंगालने की। दोषी को पाठ पढ़ाकर जनता के समक्ष पारदर्शिता और ईमानदारी का उदाहरण प्रस्तुत करने की।

यह कोई बच्चों की लड़ाई नहीं कि पहले किसने किसे चोट पहुंचाई जिसका फैसला नहीं हो पाए। यह देश को चलाने वाले राजनीतिक दलों में प्रतिष्ठित-संवैधानिक पदों पर बैठे जिम्मेदार जनप्रतिनिधियों और नेताओं से जुड़ा मामला है। इसकी सच्चाई सामने आनी ही चाहिए। पार्टी को इसका सच जनता के समक्ष रखना भी चाहिए।

भाजपा को साफ करना चाहिए कि जिला परिषद चुनाव में पैसों का लेन-देन हुआ या नहीं। हुआ तो किसने किसे कितने दिए? क्यों दिए, क्यों लिए? यदि लिए गए तो यह सीधा-सीधा भ्रष्टाचार का मामला है, जो कतई स्वीकार्य नहीं होना चाहिए। पार्टी इसे अन्दरुनी मामला बताकर खारिज नहीं कर सकती। यह सीधा जनता को प्रभावित करने वाला मामला है।

जिला प्रमुख बनाने का वादा कर कई लोगों से पैसा जुटाना और फिर उन्हें दरकिनार कर किसी अन्य को पद पर बैठाना पार्टी में बिखराव और जनप्रतिनिधियों में कार्य के प्रति अलगाव पैदा करने का ही कृत्य है। इसके खिलाफ पार्टी को सख्ती दिखानी चाहिए। धन का लेन-देन यदि नहीं हुआ तो आरोप लगाने वालों के खिलाफ पार्टी की ओर से मुकदमे दर्ज कराए जाने चाहिए।

चुनाव में लेन-देन के इन आरोपों ने भाजपा पर ऐसा दाग लगाया है, जो सख्ती बरते बिना नहीं धोया जा सकेगा। इन आरोपों ने समूची पार्टी और उसके ढांचे पर सवाल खड़े किए हैं। पैसा यदि पार्टी फंड के लिए लिया गया, तो यह और भी गम्भीर मामला है।

यह कलंक का टीका नहीं तो और क्या है कि जनता ने वोट देकर जिस पार्टी को जिताया, पद और प्रभाव पाने के लिए कुछ लोग चन्द लाख रुपए में उस पार्टी को ही खरीद लें? भाजपा को इस पर मंथन करना चाहिए।

जिन लोगों ने आरोप लगाए हैं, उनका दोष तो सामने आ ही चुका है। उन्होंने खुद जता दिया है कि वे कसूरवार हैं। यह कसूर नही तो क्या है कि वे धन के बूते पद पाने का कृत्य करते हैं? जो पैसों से पद खरीदता हो, उसके बारे में कैसे माना जा सकता है कि वह जन सेवा के लिए राजनीति में आया होगा? जो जनता के वोटों का सौदा करके कुर्सी पर बैठे हों, उनसे क्या जनहितों के लिए काम करने की अपेक्षा की जा सकती है? भ्रष्टाचार फैलाने की नहीं बल्कि जनता के लिए कुछ कर गुजरने की मंशा थी तो उन्होंने धन देकर पद खरीदना ही क्यों चाहा? यदि गलती हो भी गई तो इतना समय गुजरने के बाद ही क्यों इसका अहसास हुआ? यह सवाल उनके लिए भी गहन आत्ममन्थन का है।

-केकूकी

HIGH-END LUXURY APPARTMENTS

ARCHI Platinum
Proud to be here...

SUKHADIA CIRCLE

ARCHI PARADISE
Luxury Living

100 FT. ROAD, SOBHAGPURA

NEW VIDHYA NAGAR, SECTOR - 3

ARCHI PEACE PARK
feel the peace

OPP. CA BHAWAN, SECTOR 14

ARCHI SOLITAIRE
Apartment with luxury

ARCHI GROUP OF BUILDERS

Ground Floor, Archi Arihant Building, 100 ft. Road towards DPS, Sobhagpura Circle, Udaipur - 313001
Ph.: +91-98290 22203, +91-97848 28555, Email: himanshu@archigroup.in • Web: archigroup.in

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर (राज.) से प्रकाशित एवं पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित।
सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल- 9414165391 ● टाईटल रजि. RAJHIN 17670 ● Email : shabdranjanudr@gmail.com ● सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।